International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 07-07-2023, Accepted: 23-07-2023, Published: 08-08-2023
Volume 5, Issue 3, 2023, Page No. 5-7

शिवानी के उपन्यासों में नारी चिंतन

डॉ. विजय श्रावण घुगे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राणी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, पारोला, जलगाव, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
उपन्यास आधुनिक गद्य साहित्य की प्रमुख विधा मानी जाती है, जिसमें लेखक अपना पूरा ब्यौरा पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। उपन्यास जगत में उपन्यासकार समाज, परिवेश, संस्कृति तथा देशकाल को केंद्र में रखकर अपनी भूमिका निभाता हैं, इसलिए गद्य साहित्य की उपन्यास विधा प्रेमचंदयुग से काफी सफल रही हैं।
कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि निर्मित करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। वह कुछ इस तरह लिखती थीं कि लोगों की उसे पढने को लेकर जिज्ञासा पैदा होती थी। उनकी भाषा शैली कुछ–कुछ महादेवी वर्मा जैसी रही पर उनके लेखन में एक लोकप्रिय किस्म का मसविदा था। उनकी कृतियों से यह झलकता है, कि उन्होंने अपने समय के यथार्थ को बदलने की कोशिश नहीं की। शिवानी की कृतियों में चरित्र चित्रण में एक तरह का आवेग दिखाई देता है। वह चरित्र को शब्दों में कुछ इस तरह पिरोकर पेश करती थीं जैसे पाठकों की आंखों के सामने राजा रवि वर्मा का कोई खूबसूरत चित्र तैर जाए। उन्होंने संस्कृत निष्ठ हिंदी का इस्तेमाल किया। जब शिवानी का उपन्यास कृष्णकली, धर्मयुग, में प्रकाशित हो रहा था तो हर जगह इसकी चर्चा होती थी। मैंने उनके जैसी भाषा शैली और किसी की लेखनी में नहीं देखी। उनके उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें पढकर यह एहसास होता था कि वे खत्म ही न हों। उपन्यास का कोई भी अंश उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता था।
भारतवर्ष के हिंदी साहित्य के इतिहास का बहुत प्यारा पन्ना थीं। अपने समकालीन साहित्यकारों की तुलना में वह काफी सहज और सादगी से भरी थीं। उनका साहित्य के क्षेत्र में योगदान बडा है वर्तमान युग में शिक्षित नारी स्वतंत्र अस्तित्व की कामना कर रही हैं, इसे पूरा करने के लिए नारी को बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड रहा हैं। इस बात को शिवानी ने अपने उपन्यासों में बहुत ही बखुबी से स्पष्ट किया हैं।

मूल शब्दः साहित्य, उपन्यास, साहस, आत्मबल, आत्मविश्वास, चक्षु, बेबस, एकांतवास, अभिव्यक्ति, विविधांगी, सामाजिक मूल्य आदि

आधुनिक काल में लगातार ऐसी महिला लेखिका है जिनके लेखन कार्य से नारियों में साहस, आत्मबल, आत्मविश्वास बढ रहा हैं। इनमें कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, मेहरून्निसा परवेज और शिवानी आदि नाम महत्त्वपूर्ण है । शिवानी हिन्दी की एक कहानीकार एवं उपन्यासकार हैं। शिवानी का वास्तविक नाम 'गौरा पंत' था, किन्तु ये 'शिवानी' नाम से लेखन किया करती थीं। साठ और सत्तर के दशक में, इनकी लिखी कहानियां और उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच अत्याधिक लोकप्रिय हुए और आज भी लोग उन्हें बहुत चाव से पढ़ते हैं। स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला उपन्यास लेखिकाओं में सबसे प्रखर अभिव्यक्ति देनेवाली उपन्यासकार शिवानी का मानना है कि, नारी की खुलती विविधांगी रूपरेखाओं की छवि प्रस्तुत करनेवाली अद्‌भुत साहस की धनी माने जायेगी। नारी ह्रदय की परतों को बखुबी से खोलनेवाली चक्षु उन्हीं के पास है।

विषय प्रवेश

वर्तमान युग में शिक्षित नारी स्वतंत्र अस्तित्व की कामना कर रही हैं, इसे पूरा करने के लिए नारी को बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पड रहा हैं। इस बात को शिवानी ने अपने उपन्यासों में बहुत ही बखुबी से स्पष्ट किया हैं। शिवानी के उपन्यासों के पात्र आत्मनिर्भरता चाहते हैं। शिवानी के कुछ निम्नलिखित उपन्यास प्रकाशित हो चूँके हैं –'चौदह फेरे'–1951, 'कृष्णकली'–1962, 'भैरवी'–1969, 'श्मशान चम्पा'–1972 एवं 'कैंजा'–1975

'चौदह फेरे' इस उपन्यास में नन्दी नारी पात्र प्रमुख है। वह कर्नल शिवदत्त की पत्नी और अहल्या की माँ हैं। नन्दी धैर्यवान, आत्मविश्वासी तथा संस्कार मूल्यों की अमूल्य राशी हैं, फिर भी पति शिवदत्त उससे रूखेपन से व्यवहार करते हैं। शिवदत्त नौकरी के लिए बाहर निकल जाते है। कन्यारत्न होने पर भी उनका मिलने न आना यह बहुत बडी वेदना भय मर्मान्तक घटना है। नन्दी ससुरालवालों से अत्याचार सहती है। यह उपन्यास मनोवौज्ञानिक ढंग से लिखा गया हैं। इस उपन्यास में पुरानी और नई पीढी का संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।
नन्दी ससुरालवालों से उबकर भाई–भाभी के यहाँ चली जाती हैं। कुछ वर्षों के बाद जौसे हर जगहों पर हम देखते है कि, भाभी ननंद का प्यार और सुखापन यहाँ पर स्पष्ट दिखाया गया हैं। अंत में नन्दी अपने पति के घर लौट आती है, शिवदत्त बहुत नाराज होते है लेकिन बेटी के प्यार ने उन्हें शांत कर दिया है, परंतु पति का उपेक्षित व्यवहार, स्वभाव आखिर नन्दी को संन्यास लेने पर मजबूर कर देता है।
नन्दी वह भारतीय नारी है जो पति से जूझना चाहती है परंतु धैर्य जूटा नहीं पाती। और अंत में अहल्या भागकर अपने मन पसंद लडके से शादी करती है इस समय वसंत को नानी कहती है कि अब डर किस बात का अहल्या के तो सात फेरे हो गए। तब धरणीधर कहता है कि, 'दुश्मन की गोली से बचकर राजू का मानो, दूसरा जन्म हुआ है तब उसके सभी संस्कार दुबारा किए जाएंगे। वह भगोडी है कहीं भाग न जाए अतरू चौदह फेरे करवा कर गाँठ पक्की बांधी जाए ताकि वह दुबारा न भाग जाए।''[1]
'श्मशान चम्पा' शिवानी का एक मर्मस्पर्शी तथा गंभीरतापूर्ण और ह्रदयस्पर्शी और ह्रदय का आर्त रूदन हैं। नारी जीवन की बार–बार हार नियति का क्रूरतापूर्ण ठुकराना यही कारूणिक कथा नायिका चम्पा का हैं। उनके पिता का सेवाकाल में ही निलम्बित कर दिया जाना यही वेदना का शूल अंत तक घातक ठहरता हैं। चम्पा उच्चशिक्षित तथा पेशे से डॉक्टर है और अपरूप सौंदर्य की धनी है। चम्पा के जीवन में हर मोड पर दुःख यातनाओं में बिना सोचे समझे ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित होती है जिससे वह न चाहते हुए भी अपने आप वात्याचक्र में घीर जाती हैं।

'श्मशान चम्पा' कथा का प्रारंभ शादी टूटने से होती है, इससे उसका अस्तित्व टूटता ही चला जाता है, मानसिक, सामाजिक मूल्यों में बिखराव तथा परिस्थितियों से टकराव से उसका दायित्व घूटन में परिवर्तित हो जाता हैं। इसलिए हम कह सकते है कि, चम्पा अपने ही मन से हारी हुई बेबस नायिका है। शादी टूटने का मुख्य कारण यह है कि, चम्पा की बहन जूही भागकर अर्न्तजातीय विवाह कर लेती हैं।

चम्पा डॉक्टर होने की वजह से घर के सार रिश्तों में उसे स्वार्थवृत्ति का ही परिचय मिलना मिलता है, जब सेनगुप्त के जंगल के अस्पताल में उसे माँ भगवती छोड आती है, तब का वर्णन बहुत ही गंभीरतापूर्ण शौली में लेखिका ने किया है कि, ''दूसरे ही दिन से भगवती ने अपने से सेनेटोरियम प्रस्थान की तैयारियाँ आरंभ कर दी। कभी–कभी वह पैकिंग करती–करती गहरी उदासी में डूब जाती हैं। इतनी दूर उस जंगल में, वह चम्पा को अकेली छोड कर जा रही थी और स्वयं अपने एकांतवास से, परिचित परिवेश में भागने का उत्साह उसे प्रफुल्लित कर रहा था। अपने इसी स्वार्थ की अनभिज्ञता से उसका चित्र सहसा खिन्न हो उठता है और वह बडी देर तक इधर–उधर फैली साडियों और गर्म कपडों के बीच घंटों हाथ पर हाथ धरे बैठी ही रह जाती है।''[2]

कथा का नायक डॉ. मधुसुदन ईश्वर प्रदत्त है, वह चम्पा को देखते ही मुग्ध हो जाता हैं। परंतु उसके पिता किसी अन्य जगह पर उसका विवाह तय कर देते है और आगे चलकर चम्पा एक धनुर्पात मरिज की सेवा में जूट जाती हैं। एक दिन मधुसुदन से उसकी मुलाकात हो जाती है वह चम्पा के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है परंतु चम्पा बिना किसी सूचना के उसके साथ भाग जाती है।

चम्पा की आत्मविश्वास की कमी से उसका पूरा जीवन काँटों की शैय्या पर ही बिछा मिलता हैं। अंत तक वह कभी भी अपने मन में फैसला नहीं कर पाती है कि उसे क्या करना है ? अंत में लेखिका ने चम्पा को श्मशान चम्पा क्यों कहा है ? इसका जवाब देती है कि, ''यद्यपि वह उज्जवल स्निग्ध और सुगन्धित है तब भी श्मशान विधि में विकसित चम्पक वृक्ष की भाँति लोगों द्वारा अभिगमनीय नहीं है कोई भी तेरे पास नहीं जाना चाहेगा चम्पा नहीं तू श्मशान चम्पा हैं। इस उपन्यास की भाषा शैली तथा मुहावरेंदार प्रयोग हैं। इससे पाठक के मान में कई तरह के सवाल तथा जिज्ञासा भर देता है। इसलिए यह उपन्यास उच्चकोटि का साबित हुआ हैं।''[3]

'कैंजा' उपन्यास वर्तमान युग की नारी विशेषताओं भरा सकल प्रयास भरा उपन्यास हैं। 'कैंजा' उपन्यास की नायिका नंदी तिवारी की यह कथा है। वह पेशे से डॉक्टर है और सुरेश के साथ प्रेम करती हैं। इस उपन्यास में सदियों से चली आ रही भविष्य, हस्तरेखाएँ इन सभी का रूप सर्वसमावेशक रूप में किया गया है किए नंदी के पिता ने नंदी का भविष्य देखकर उसे जताया है कि उसे जीवन में घोर वैधव्य का योग है। उसके जीवन में सुरेश स्वयं नंदी के पिता के पास विवाह का प्रस्ताव लेकर आता है परंतु वहाँ से इन्कार पाकर सुरेश जीवन की पथ भ्रष्टता की और मुड जाता है।

सुरेश के हाथों एक भयानक दुर्व्यवहार हो जाता है कि, एक पगली लडकी से शारीरिक संयोग से वह उसे गर्भवती बना देता है, और संयोगवश उस पगली की प्रसवता नंदी ही करती है और वह प्रसव वेदना से त्रस्त होकर एक बच्चे को जन्म देकर मृत्युशय्या को अपना लेती है। उस बच्चे का पालन–पोषण नंदी ही करती हैं।

इस उपन्यास की महानता इसी में है कि अंत तक पाठक की नजर नंदी पर ही गढी रहती हैं। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि 'कैंजा' मतलब सौतेली माँ, उस बच्चे का पालन–पोषण करते हुए वह अपने आपको बच्चे की सौतेली समझती हैं। जब वह बच्चे को उसके पिता से अर्थात सुरेश से मिलने ले जाती है तब जाते समय उसके मन में हर्ष, उत्साह, प्रेम तथा एक रोमांचकारी कल्पनाएँ थी परंतु जब सुरेश को मृत्युशय्या पर पडे देखकर वह बहुत वियोग–विषाद में डूब जाती हैं। वह सुरेश से कहती है कि, ''वही करने तो आई हूँ, मैं तुमसे विवाह कर तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगी। उससे इस विवाह के विषय में हम कुछ नहीं कहेंगे। कह दूँगी आज तक तुम्हारे पिता से मेरा झगडा था, अब मेल हो गया हैं। विमाता का सम्बोधन मुझे कभी नहीं डस पाएगा सुरेश, जहाँ मेरी नौकरी है वहाँ मेरा अतीत एक नये अतीत के रूप बडी आसानी से उभर सकता है।''[4]

उपन्यास साहित्य में नारी पुरूष को एक प्रमुख आधार बनाकर मानवीय मूल्यों को साकार करने की अवधारणा प्रमुख होती हैं, परंतु आज विश्व अपनी विकास की इस भागदौडभरे माहौल में हम देखते है कि, पुरूषों की अपेक्षा नारी कही पीछे तो नहीं रह गई है, या इसके इस प्रश्न के लिए ऐसे कौन से कारण हैं, जिनकी यह वजह है कि नारी को रूकना पड रहा है। उपन्यास का अंतिम पड़ाव बहुत ही मार्मिक तथा हृदयद्रावक हैं। वह सुरेश से मरनासन्न अवस्था में शादी कर लेती है अर्थात परिस्थितियाँ मनुष्य को क्या नहीं करना सिखा सकती इसका जीता जागता उदाहरण यह उपन्यास हैं। नारी मन की गुत्थियाँ लेखिका ने पाठकों के सामने खोलकर रख दी हैं।

नारी को सदियों से बताया गया है कि उसे समाज तथा संस्कृति के बंधनों से निकलना नहीं हैं, इस संदर्भ में डॉ. सिन्धु भिंगारकर लिखती है कि, ''नारी की इस असीम सहनशक्ति ने ही नारी की भयानक दुर्गति बना दी और जिस पुरूष ने दुर्गति बनायी उसने उस सहनशक्ति को मधु–मधुर नाम दिया है, पतिव्रताधर्म।''[5]

निष्कर्ष

1. कई लेखिकाओं का मानना है कि, नारी की असीम सहनशक्ति ने ही नारी की भयानक दुर्गति बना दी और जिस पुरूष ने दुर्गति बनायी उसने उस सहनशक्ति को एक सुन्दर नाम दिया है, पतिव्रतधर्म।
2. शिवानी के उपन्यास अपने समय से लेकर आज तक तथा आने वाले समय में भी समाज को दिशा दर्शाने का और नारी मन की अथाह गहरी भावनाओं का अंकन अर्थात ममत्व, प्रेम, स्वालंबन और जीवन कठिनाईयों में से रास्ता निकालने का संयम, त्याग आदि इन्ही भावनाओं से सदा ओत–प्रोत करते रहेंगे।
3. स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला उपन्यास लेखिकाओं में सबसे प्रखर अभिव्यक्ति देनेवाली उपन्यासकार शिवानी का मानना है कि, नारी की खुलती विविधांगी रूपरेखाओं की छवि प्रस्तुत करनेवाली अद्‌भुत साहस की धनी माने जायेगी। नारी हृदय की परतों को बखुबी से खोलनेवाली चक्षु उन्हीं के पास है।
4. कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रुचि निर्मित करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। वह कुछ इस तरह लिखती थीं कि लोगों की उसे पढने को लेकर जिज्ञासा पैदा होती थी। उनकी भाषा शैली कुछ–कुछ महादेवी वर्मा जैसी रही पर उनके लेखन में एक लोकप्रिय किस्म का मसविदा था।
5. उपन्यास साहित्य में नारी पुरूष को एक प्रमुख आधार बनाकर मानवीय मूल्यों को साकार करने की अवधारणा प्रमुख होती हैं, परंतु आज विश्व अपनी विकास की इस भागदौडभरे माहौल में हम देखते है कि, पुरूषों की अपेक्षा नारी कही पीछे तो नहीं रह गई है, या इसके इस प्रश्न के लिए ऐसे कौन से कारण हैं, जिनकी यह वजह है कि नारी को रूकना पड रहा है।
6. कहा जा सकता है की, शिवानी जी अपनी कुशल शैली से नारी मन की विविधांगी गहराई तक गई है, अर्थात नारी मन

का अथाह सागर जिस में तल तक पहूँचना यह कठिन परिश्रम हैं परंतु लेखिका शिवानी ने अपनी शैली से पाठकों को एक ऐसी राह तैयार कर दी है की वहाँ तक हम आराम से चले जाते हैं।

संदर्भ सूचि

1. शिवानी, चौदह फेरे, पृ. क्रं. 22
2. शिवानी, श्मशान चम्पा, पृ. क्रं. 14
3. वही पृ. क्रं. 145
4. शिवानी, कैंजा, पृ. क्रं. 47–48
5. जगताप डॉ. आर. एस., मेहरून्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी, विद्या प्रकाशन, कानपुर – प्रथम संस्करण 2010, पृ. क्रं. 61